व्याकरण दर्पण 6

1. भाषा विचार

1 (क) भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम बोलकर या लिखकर दूसरों तक अपने विचार एवं भाव पहुँचाते हैं।

(ख) भाषा के दो रूप हैं – मौखिक और लिखित।

मौखिक भाषा – बोलकर अपनी बात समझाना तथा सुनकर दूसरों की बात समझना मौखिक भाषा कहलाता है।

लिखित भाषा – लिखकर अपनी बात समझाना तथा पढ़कर दूसरों की बात समझना लिखित भाषा कहलाता है।

(ग) भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। एक भाषा के अंतर्गत बहुत सी बोलियाँ आ सकती हैं। भाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता है।

(घ) विचारों या ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने वाले निश्चित चिह्नों को लिपि कहते हैं। भाषा के एक निश्चित स्थाई आधार के लिए लिपि आवश्यक है।

(ङ) व्याकरण हमें भाषा को शुद्ध रूप में बोलने, लिखने तथा पढ़ने के नियम बताता है। इसलिए भाषा को समझने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

2 (क) (ख) (ग)

3 (क) भाषा (ख) मौखिक (ग) बोली (घ) लिपि (ङ) व्याकरण

4 हिंदी – देवनागरी; पंजाबी – गुरमुखी; अंग्रेज़ी – रोमन; उर्दू – अरबी-फ़ारसी

5 (घ) ✓

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) 2 (घ) 3 (क) 4 (ग)

रचनात्मक गतिविधि

कुछ लोग रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे हैं। एक यात्री अपनी सीट पर बैठे-बैठे सो रहा है। उसके पीछे की सीट पर दोनों यात्री हँस-हँसकर बातें कर रहे हैं। पिछली सीट पर बैठा व्यक्ति कुछ सोच रहा है और उसके पास बैठा बच्चा कौतुहलवश इधर-उधर देख रहा है। सभी यात्री अपने-अपने ढंग से रेलगाड़ी की यात्रा का आनंद ले रहे हैं।

2. वर्ण विचार

1 (क) भाषा की वह मूल इकाई, जिसके और खंड न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है। हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं – स्वर और व्यंजन।

(ख) स्वर दो प्रकार के होते हैं –

ह्रस्व स्वर – इन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है; जैसे– अ, इ।

दीर्घ स्वर – इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है; जैसे– आ, ई।

(ग) स्वर अपने आप में स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। इनके बोलने में किसी अन्य ध्वनि की सहायता नहीं लेनी पड़ती। इनके उच्चारण में हवा मुँह में बिना टकराए बाहर आती है जबकि व्यंजन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। इनको बोलते समय हवा मुँह के भीतर टकराकर बाहर आती है।

(घ) ह्रस्व स्वर चार हैं – अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ स्वर सात हैं – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

2 (ख) और (ग)

3 कृपा परिवर्तन प्रदीप राष्ट्रीय आर्यन सहर्ष अमृत वर्णन कार्यक्रम

4 बाँसुरी बंधन माँद आँगन सारंग कुआँ गंगा अहंकार गँवाना

5 भावना – भ् + आ + व् + अ + न् + आ

वृंद – व् + ऋ + अं + द् + अ

स्वतंत्र – स् + व् + अ + त् + अं + त् + र् + अ

महात्मा – म् + अ + ह् + आ + त् + म् + आ

विद्यालय – व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

बहुविकल्पी प्रश्न – 1 (ग) **2** (क) **3** (ख) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

अँधेरा	नक्षत्र
परिश्रम	गद्दार
राष्ट्रीयता	गाँव
कृपण	श्रवण
नम्रता	पत्र
उत्सर्ग	गद्दा
घमंड	तंग
कंगन	स्वर्ग

अँ	धे	रा	प	रि	श्र	म
क	च	ष्ट्री	त्र	गाँ	व	न
छ	ङ	य	कृ	प	ण	व
न	म्र	ता	स्वि	तं	क	र
ल	उ	त्स	र्ग	ग	प	ब
घ	मं	ड	ग	द्दा	र	ण
कं	ग	न	क्ष	त्र	ढ	द

3. वर्तनी की अशुद्धियाँ

1 संन्यास उज्ज्वल अनधिकार ऋण आगामी आवश्यकता घनिष्ठ अभिप्राय कंगन कृष्ण

2 (क) चंदन (ख) मिट्टी (ग) श्रीमती (घ) कृपा

3 कृप्या पोरुश उपसीथती प्रियदरशनी

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (ख) **3** (ख)

4. शब्द विचार

1 (क) वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है।

(ख) शब्दों को बाँटने के चार प्रमुख आधार हैं–

1. उत्पत्ति का आधार 2. रचना का आधार
3. प्रयोग का आधार 4. अर्थ का आधार

(ग) संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जो हिंदी में भी उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं जिस रूप में संस्कृत में प्रयुक्त होते थे, 'तत्सम शब्द' कहलाते हैं; जैसे – क्षेत्र, रात्रि, दुर्बल आदि।

(घ) जब संस्कृत के शब्द कुछ बदलाव के साथ हिंदी में प्रयोग किए जाने लगते हैं तो वे तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे– पत्र – पत्ता, कंटक – काँटा, दंत – दाँत, कर्ण – कान

(ङ) ऐसे शब्द जिनके सार्थक टुकड़े नहीं हो सकते तथा जो एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे – पानी, पुस्तक, गिलास, चाय, अलमारी आदि।

(च) जिन शब्दों में लिंग, वचन तथा कारक के बदलने से परिवर्तन हो जाता है उन्हें विकारी शब्द कहते हैं तथा जिन शब्दों में लिंग, वचन तथा कारक के बदलने से कोई परिवर्तन नहीं आता उन्हें अविकारी या अव्यय कहा जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी होते हैं तथा क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी होते हैं।

2 गाय – रूढ़ शब्द
नीला – रूढ़ शब्द
हवा – रूढ़ शब्द
महर्षि – यौगिक शब्द
नीलकंठ – योगरूढ़ शब्द
हवादार – यौगिक शब्द
दशानन – योगरूढ़ शब्द
पीला – रूढ़ शब्द
हिमालय – योगरूढ़ शब्द

3 (क) अविकारी (ख) यौगिक (ग) तद्भव (घ) पीला (ङ) चार

4 क्षेत्र – खेत गर्दभ – गधा कंटक – काँटा
कर्ण – कान घृत – घी हस्ति – हाथी

5 विकारी – आप, कविता, पुस्तक, स्वप्न, बंधु
अविकारी – उधर, वाह, धीरे, और, शाबाश

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (ग) **3** (ग) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

1 पलक **2** कपोत **3** तकदीर **4** रवि **5** विज्ञान **6** नयन

7 नर **8** रस **9** सदा

5. संज्ञा

1 (क) नाम वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ख) संज्ञा के तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम)– नीलम, ताजमहल आदि व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं।
2. जातिवाचक संज्ञा (किसी जाति का बोध कराने वाले शब्द)– लड़की, गाँव आदि जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं।
3. भाववाचक संज्ञा (भाव, स्वाद, एहसास आदि के नाम वाले शब्द)– कड़वाहट, घबराहट, बचपन आदि भाववाचक संज्ञा शब्द हैं।

(ग) 1. आज तो संसार में हर दिशा में यमराज हैं।

2. ईश्वर करे सबके आँगन में गुलाब खिलते रहें।

2

मनुष्यता – मनुष्य	एकता – एक	बुढ़ापा – बूढ़ा
थकावट – थकान	शत्रुता – शत्रु	अपनापन – अपना
उदासी – उदास	समानता – समान	कसावट – कसना

3 (क) मनुष्यता (ख) गंभीरता (ग) मित्रता (घ) सफलता

4 उदासी – उदास – विशेषण कसाव – कसना – क्रिया

अपनापन – अपना – सर्वनाम नारीत्व – नारी – जातिवाचक संज्ञा

5 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

जातिवाचक संज्ञा – गाँव, किसान, पुत्रियाँ, अँगूठी, हार, कपड़े, दिन, शहर, चीज़ें, बेटियों, सामान, फूल।

व्यक्तिवाचक संज्ञा – बिन्ना, फ्लोना, सुंदरी, सोने, मोतियों, सोने-चाँदी, गुलाब।

भाववाचक संज्ञा – समय, बात, व्यवहार, पसंद, आदतें, मदद, निश्चय।

6. लिंग

1 (क) पुरुष एवं स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द व्याकरण में लिंग कहलाते हैं। इनका व्याकरण में पर्याप्त महत्व है, क्योंकि लिंग परिवर्तन से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में भी परिवर्तन हो जाता है।

(ख) हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद हैं–

1. पुल्लिग – शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे पुल्लिग कहते हैं; जैसे – लड़का, गधा, कुत्ता आदि।
2. स्त्रीलिंग – शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे – दादी, लड़की, बिल्ली आदि।

2 कवयित्री, गायिका, सम्राट, अध्यापक, विदुषी, लड़की, पिता, नायक, धोबिन, हिरण, शेरनी, स्वामिनी

3 मानव – पुल्लिग खुशी – स्त्रीलिंग जुलाई – स्त्रीलिंग

प्राण – पुल्लिग आँसू – पुल्लिग आँख – स्त्रीलिंग

कान – पुल्लिग पुस्तक – स्त्रीलिंग

4 (क) धोबिन ने कपड़े धोए। (ख) माता जी आ गई हैं।

(ग) धाविका तेज़ दौड़ी। (घ) गायिका ने गीत सुनाए।

5 पुल्लिग – पुरुष, हंस, दानव, ध्यान, ज्ञान, यकीन

स्त्रीलिंग – सज़ा, प्यास, चाबी, ज़मीन, हालत, क्षत्राणी

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (क) **3** (ख) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

एक दिन **सेठ** और **सेठानी** तीर्थ यात्रा पर गए। उनके साथ उनका **बेटा** और **बेटी** भी गए। सेठ घर की देखरेख के लिए पड़ोस के **ठाकुर** और **ठकुराइन** को बोल गए। तीर्थ यात्रा में वे एक सराय में ठहरे जहाँ उन्हें एक **बूढ़ा-बुढ़िया** मिले। वे असहाय थे, अतः सेठ के परिवार ने उनकी बहुत सेवा की। सेठ के परिवार की सेवा से खुश होकर सेठ को उन्होंने एक **लुटिया** दी और कहा इसे साधारण **लोटा** मत समझना। यह तुम्हारी हर मनोकामना पूरी करेगा। सराय का **मालिक** और **मालकिन** ये सारी बातें सुन रहे थे। उनके मन में लालच आ गया। **तपस्वी-तपस्विनी** का वेश बनाकर सेठ के पास जा पहुँचे और भिक्षा माँगी। सेठानी खाना और कुछ पैसे देने लगी, लेकिन उन **पति-पत्नी** ने चालाकी से वह लोटा भी भिक्षा में माँगा। सेठ ने कुछ सोचा और लोटा उन्हें दे दिया।

7. वचन

1 (क) जो शब्द व्यक्ति, वस्तु, स्थानादि के एक या अनेक होने का बोध कराएँ, उन्हें वचन कहते हैं।

(ख) हिंदी व्याकरण में वचन के दो भेद माने गए हैं–

1. एकवचन – शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थानादि की संख्या केवल 'एक' होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं; जैसे – नदी, बालक, पक्षी।
2. बहुवचन – शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थानादि की संख्या 'एक से अधिक' होने का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं; जैसे – कुत्ते, नदियाँ, बिल्लियाँ।

(ग) सदा एकवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द – भीड़, जनता, पुलिस, मिठास, घबराहट

सदा बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्द – दर्शन, प्राण, आँसू, हस्ताक्षर, लोग

2 प्राण – बहुवचन　　गुड़ियाँ – बहुवचन　　ऋतु – एकवचन

जनता – एकवचन　　महिला – एकवचन　　गुरुजन – बहुवचन

3 लहर, छात्रगण, बालाएँ, घोड़े, टोपी, डलियाँ, नेतागण, कमरे, दुआएँ, तारे

4 1. पिता जी अखबार पढ़ रहे हैं।
2. प्रतिभा पाटिल देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनीं।
3. गुरु जी आ गए।
4. नानी जी कहानी सुना रही हैं।
5. नेताजी विमान दुर्घटना में अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गए।

5 (क) पिता जी ने हस्ताक्षर कर दिए।

(ख) महात्मा गांधी सबके प्रिय हैं।

(ग) पंडित जी ने तीन कथाएँ सुनाईं।

(घ) चरवाहा सारी गायें चराने ले गया।

(ङ) भारतीय सेना ने शत्रु को भगा दिया।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग)　**2** (क)　**3** (घ)　**4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

मिट्टी से पौधे निकले　　पौधे पर दो फूल खिले,
उन्हें हवाओं ने सहलाया,　　चिड़िया ने गाना गाया
तारा कौन उगाते हैं,　　धरती कौन सजाता है,
बादलों को कौन बनाता है,　　कोई नहीं बताते हैं।

8. कारक

1 (क) संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताने वाले चिह्न कारक कहलाते हैं। कारक को परसर्ग या विभक्ति भी कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद हैं–

1. कर्ता कारक (ने) – लोमड़ी ने चालाकी दिखाई।
2. कर्म कारक (को) – आपको कहाँ जाना है?
3. करण कारक (से) – चाकू से सब्ज़ी काटो।
4. संप्रदान कारक (को, के लिए) – मधु के लिए खिलौने लाओ।
5. अपादान कारक (से – अलग होने का भाव) – पेड़ से पत्ते गिरे।
6. संबंध कारक (का, के, की/रा, रे, री) – तुम्हारे पास आम हैं।
7. अधिकरण कारक (में, पर) – टोकरी में बिल्ली है।
8. संबोधन कारक (हे, अरे, ओ) – हे प्रभु! गरीब सुदामा की पुकार सुनो।

(ग) कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों की विभक्ति 'को' है। परंतु कर्म कारक में 'को' क्रिया का फल कर्म पर दिखाता है जबकि संप्रदान कारक में 'को' विभक्ति से कुछ देने या करने के भाव का पता चलता है।

कर्म कारक – मधु ने कुसुम को गिरा दिया।

संप्रदान कारक – प्रभात ने यशोदा को सेब दिया।

(घ) अपादान कारक संज्ञा या सर्वनाम के किसी वस्तु से अलग होने के भाव को प्रकट करता है;

जैसे – प्रभा साइकिल से गिर गई। मनु कार से उतर गई।

2 (क) संप्रदान कारक (ख) संप्रदान कारक (ग) संप्रदान कारक (घ) कर्म कारक

3 माँ बच्चे को नहला रही है। – कर्म

हम हवाई जहाज़ से बैंगलोर गए। – करण

अखबार मेज़ पर रखा है। – अधिकरण

हे भगवान! यह क्या कर डाला। – संबोधन

आपकी यात्रा कैसी रही? – संबंध

4 (क) करण कारक (ख) अधिकरण कारक (ग) संबंध कारक

(घ) संबंध कारक (ङ) संबोधन कारक (च) अपादान कारक

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क)

रचनात्मक गतिविधि

मैं अपने भाई के साथ मेला देखने गई। मेला बहुत बड़े मैदान में लगा हुआ था। चारों ओर खेल-खिलौनों और मिठाइयों की दुकानें सजी हुई थीं। मेले में तरह-तरह के झूले लगे हुए थे। मैं भी अपने भाई के साथ झूले में झूली। फिर मैंने एक गुब्बारेवाला देखा। उसके पास रंग-बिरंगे बहुत सारे गुब्बारे थे। मेरे भाई ने मुझे नारंगी रंग का सबसे सुंदर गुब्बारा दिलवाया। हमने मिठाइयाँ भी लीं। फिर हम घर लौट आए।

9. सर्वनाम

1 (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे – मैं, तुम, यह, वे आदि।

(ख) 1. पुरुषवाचक सर्वनाम–

- ☛ उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम – मैं
- ☛ मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम – तुम
- ☛ अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – वे

2. निश्चयवाचक सर्वनाम – यह
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – किसी
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम – क्या
5. संबंधवाचक सर्वनाम – जिसने-उसने
6. निजवाचक सर्वनाम – स्वयं

(ग) जो सर्वनाम शब्द दूर या पास की किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में निश्चयपूर्वक कुछ बताएँ, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इसके विपरीत जो सर्वनाम शब्द किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2 (क) मोहन को अपनी दादी अच्छी लगती हैं।

(ख) खरगोश को लेकर अस्मिता अपने घर चली गई।

(ग) माधव मोहित को उसके चाचा जी के बारे में बता रहा है।

(घ) वह कलम पकड़कर उससे कुछ लिख रही है।

3 (क) किससे (ख) हम (ग) कुछ (घ) उससे (ङ) स्वयं

4 शादीराम पंडित थे। वे दिल के बुरे न थे। लाला सदानंद उनके यजमान थे। वे यजमान का ऋण चुकाना चाहते थे। पैसे जमा करते लेकिन कुछ न कुछ आकस्मिक खर्च निकल आता। जैसे-तैसे किसी तरह रुपये जोड़े। अचानक उनका बेटा बीमार पड़ गया। सारा रुपया उसकी बीमारी में खर्च हो गया।

5 (क) अन्य पुरुषवाचक (ख) अनिश्चयवाचक (ग) प्रश्नवाचक (घ) संबंधवाचक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

पुरुषवाचक – तुम्हारी, हमारी, आपमें

निश्चयवाचक – यह, इससे, उसको

अनिश्चयवाचक – किन्हीं

प्रश्नवाचक – किनका, कौन

निजवाचक – अपने आप

10. विशेषण

1 (क) संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं तथा जिन शब्दों (संज्ञा/सर्वनाम) की वे विशेषता बताते हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं।

(ख) विशेषण के चार भेद हैं–

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

(ग) गुणवाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष, रूप-रंग, आकार-प्रकार, अवस्था तथा स्थान आदि के बारे में बताता है।

(घ) विशेषण की अवस्था की पहचान करने के लिए शब्द को ध्यान से देखना चाहिए। मूलावस्था में विशेषण शब्द अपने मूल रूप में होता है। उत्तरावस्था में मूल विशेषण शब्द के साथ 'तर' जुड़ा रहता है तथा उत्तमावस्था में मूल विशेषण शब्द के साथ 'तम' जुड़ा रहता है।

2 बड़ा, सुंदर – संदूक लाल, हरी – मिर्च काले, लंबे – बाल
साफ़, चौड़ी – सड़क ऊँची, पक्की – दीवार खतरनाक, बड़ा – शेर

3 (क) छोटा – गुणवाचक विशेषण (ख) वे, हमारे – सार्वनामिक विशेषण
(ग) दो दिन – निश्चित संख्यावाचक (घ) ज़हरीले – गुणवाचक विशेषण
(ङ) थोड़ा – अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

4 (क) सुंदर (ख) इतने (ग) कठिन (घ) यह (ङ) दस किलो

5 मूलावस्था – लघु उत्तरावस्था – सुंदरतर
उत्तमावस्था – मधुरतम, कोमलतम

6 (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (ग) **3** (क) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
शास्त्रीय	गायन	लालची	सेठ
ऊँची	छत	डेढ़ किलो	आलू
वीर	योद्धा	रंगीन	कपड़ा
कड़वी	ककड़ी	पिछला	दरवाज़ा
पालतू	बिल्ली	खुले	पैसे
काफ़ी	खाना	मोटा	भालू

11. क्रिया

1. (क) किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं; जैसे– चलना, उड़ना, बनाना, रोना, खेलना आदि।

(ख) जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। वाक्य में सकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए 'क्या' और 'किसको' लगाकर प्रश्न करना चाहिए, यदि इन प्रश्नों का उत्तर मिले तो क्रिया सकर्मक होगी।

जैसे –उसने मुझे सेब दिया। क्या दिया? – सेब किसको दिया? – मुझे

अत: इस वाक्य की क्रिया, सकर्मक क्रिया है।

(ग) सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं–

1. एककर्मक क्रिया – एक कर्म वाली क्रिया – मधु ने चाय पी।
2. द्विकर्मक क्रिया – दो कर्म वाली क्रिया – नानी ने मुझे कहानी सुनाई।

(घ) जहाँ कोई क्रिया किसी की प्रेरणा से हो रही हो, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे – नानी ने राधा से पत्र लिखवाया।

(ङ) प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया – 1. माँ अमन को खाना खिलाती है।
2. पिता जी शुभम को जगाते हैं।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया –1. मालिक ने नौकर से चाय बनवाई।
2. माँ ने पिता जी से बच्चे को सुलवाया।

2 (क) मैच (ख) फ़सल (ग) माँ (घ) पतंग (ङ) जाल (च) कपड़े

3 (क) खेलना (ख) खाकर (ग) बैठने (घ) गिरा (ङ) निकलता

4 (क) खिलाना, खिलवाना (ख) पिलाना, पिलवाना (ग) सिखाना, सिखवाना (घ) दिलाना, दिलवाना (ङ) छुड़ाना, छुड़वाना (च) हँसाना, हँसवाना

5 (क) एककर्मक (ख) गौण (ग) द्वितीय प्रेरणार्थक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (घ) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

बहाने लुटाने मर जाने मरता है सोया हुआ टूटना जागे मनाने

सिलाने बुझ जाने मरा करता खोता बदलती रात उतार पहने

अकर्मक – जागना, सोना, मरना

सकर्मक – मनाना, सिलाना, बहाना, लुटाना, मरना (सपना), टूटना, बुझना, खोना, बदलना, उतारना, पहनना

एककर्मक – बहाना, लुटाना, सिलाना

12. काल

1 (क) क्रिया के करने या होने के समय को काल कहते हैं; जैसे – माँ टहल रही है। गोपाल ने दूध पी लिया था। मनु कल पढ़ने जाएगी।

(ख) काल के तीन भेद हैं – वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल। इनके अनेक उपभेद हैं–

1. वर्तमान काल

   (क) सामान्य वर्तमान (ख) अपूर्ण वर्तमान (ग) संदिग्ध वर्तमान

2. भूतकाल

   (क) सामान्य भूतकाल (ख) आसन्न भूतकाल (ग) पूर्ण भूतकाल

   (घ) अपूर्ण भूतकाल (ङ) संदिग्ध भूतकाल (च) हेतुहेतुमद् भूतकाल

3. भविष्यत् काल

   (क) सामान्य भविष्यत् काल

   (ख) संदिग्ध या संभाव्य भविष्यत् काल

(ग) अपूर्ण वर्तमान काल क्रिया के पूरा न होने तथा जारी रहने की स्थिति बताता है; जैसे – कुसुम लिख रही है।

(घ) जहाँ क्रिया के भूतकाल में होने के विषय में किसी तरह की कोई शर्त रख दी जाए, वहाँ क्रिया का काल हेतुहेतुमद भूतकाल होता है; जैसे – बारिश न आती तो हम घूमने जाते।

2 (क) हम कल सरकस देखने जा रहे थे।

(ख) तुम बाज़ार जाते तो मेरे लिए फल लाते।

(ग) शायद वह बैंक से रुपये निकालने जाए।

3 (क) अपूर्ण भूतकाल (ख) संदिग्ध या संभाव्य भविष्यत् काल

(ग) अपूर्ण वर्तमान (घ) हेतुहेतुमद् भूतकाल

4 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗

5 (क) वर्तमान काल – गरिमा विद्यालय जा रही है।

भूतकाल – गरिमा विद्यालय जा चुकी है।

भविष्यत् काल – शायद गरिमा विद्यालय जाए।

(ख) वर्तमान काल – फूल खिलते हैं।

भूतकाल – फूल खिल चुके हैं।

भविष्यत् काल – फूल खिलेंगे।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (ख) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

यह बाज़ार का दृश्य है। इस स्थान पर हर रविवार को बाज़ार लगता है। दुकानदार अपना सामान बेच रहे हैं। यहाँ तरबूज़ भी मिल रहे होंगे। एक स्त्री ने सब्ज़ीवाले से लौकी का दाम पूछा। वह अन्य सब्ज़ियाँ खरीद चुकी है। स्त्री को आलू लेने थे पर आलू बेचने वाले जा चुके थे। अब बस अन्य सब्ज़ीवाले सब्ज़ियाँ बेच रहे थे। शायद कुछ और सब्ज़ीवाले भी जा चुके होंगे। यदि वह थोड़ा जल्दी आती तो आलू भी मिल जाते। अब वह कल दूसरे बाज़ार से आलू लाएगी। शायद वहाँ उसे और भी अच्छी सब्ज़ियाँ मिल जाएँ।

13. क्रियाविशेषण

1 (क) विशेषण जब क्रिया की विशेषता बताते हैं तो वे क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

(ख) क्रियाविशेषण के चार भेद हैं–

1. कालवाचक क्रियाविशेषण – मधु <u>सदा</u> हँसती रहती है।
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण – मंदिर के <u>सामने</u> लोग खड़े हैं।
3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण – खरगोश <u>तेज़</u> दौड़ता है।
4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण – गर्मी में <u>खूब</u> पानी पीना चाहिए।

(ग) विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं जबकि क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं।

2 (क) अब – कालवाचक क्रियाविशेषण

(ख) धीरे-धीरे – रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(ग) जी भर – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(घ) यहाँ – स्थानवाचक क्रियाविशेषण

3 (क) अच्छी – विशेषण अच्छी तरह – क्रियाविशेषण

(ख) ठीक – विशेषण ठीक से – क्रियाविशेषण

(ग) सुंदर – विशेषण सुंदर – क्रियाविशेषण

4 (क) कुछ (ख) कितनी (ग) यहाँ (घ) धीरे-धीरे

5 (क) क्रिया की विशेषता (ख) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(ग) चार (घ) स्थान

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (ख) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

जैसे-जैसे दिन ढल रहा था। राजू की मंज़िल **निकट** आ रही थी। वह गाँव तक **झटपट** पहुँच जाना चाहता था। उसे अपनी माँ को अपने **सामने** देखने की इच्छा थी। गाँव से **बाहर** रहकर उसने धन तो **बहुत** कमा लिया, लेकिन माँ को **हर दिन** भुलाता रहा। उसे **परसों** माँ की बीमारी का समाचार मिला।

समाचार पाकर वह **सरपट** दौड़ पड़ा, माँ से मिलने। घर पहुँचकर उसने **तेज़ी से** दरवाज़ा खोला। वह माँ से लिपटकर **खूब** रोया। उसने निश्चय किया कि वह अब **यहीं** रहेगा।

14. अन्य अविकारी शब्द

1 (क) वे अव्यय शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर उनका संबंध वाक्य में आए अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जोड़ते हैं, संबंधबोधक कहलाते हैं।

(ख) ये अव्यय शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को आपस में जोड़ते हैं।

(ग) विस्मयादिबोधक आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा, चेतावनी, संबोधन आदि भावों को प्रकट करते हैं।

2 (क) संबंधबोधक (ख) विस्मयादिबोधक (ग) समुच्चयबोधक

(घ) संबंधबोधक (ङ) समुच्चयबोधक

3 (क) गौरी बाद में आएगी। मीना के बाद गौरी आएगी।

(ख) नीचे गहरी खाई थी। मेज़ के नीचे बिल्ली बैठी है।

(ग) उसके सामने शेर बैठा था। मंदिर के सामने भिखारी बैठा था।

4 (क) बल्कि (ख) मानो (ग) तो (घ) ताकि

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

राखी **और** खुशी दो सहेलियाँ थीं। राखी खुशी **की अपेक्षा** अधिक समझदार थी **मगर** खुशी **से अच्छा** गाना नहीं गा पाती थी। एक बार राखी खुशी **के साथ** गायन प्रतियोगिता में गई **किंतु** किसी को उसका गाना अच्छा न लगा। खुशी **के द्वारा** गाए गए गाने के लिए सभी बोल उठे, **बाप रे बाप**! इतनी छोटी लड़की का गाना इतना **अच्छा**! तब राखी बोली, **उफ़**, अब मैं क्या करूँ। गाना सीखूँ **अन्यथा** कोई मुझे पसंद नहीं करेगा। तब खुशी ने कहा, नहीं तुम हमेशा मेरी अच्छी सखी रहोगी। चाहे तुम गाना सीखो **अथवा** न सीखो।

15. विराम चिह्न

1 (क) पढ़ते-लिखते समय जहाँ बहुत कम देर के लिए ठहरने का संकेत देना हो, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है।

- ❖ संज्ञाओं, संख्याओं या वाक्यांशों के बीच यदि कोई समुच्चयबोधक शब्द (और, या) या योजक चिह्न (-) न लगा हो, तो अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है।
- ❖ आपस में संबंध रखने वाले दो शब्दों, वाक्यांशों के बीच कोई अन्य पद, वाक्यांश या वाक्य-खंड आ जाए, तो उसके दोनों ओर अल्पविराम का प्रयोग होता है।
- ❖ एक वाक्य में किसी शब्द को दो बार न लिखकर, उसकी पूर्ति अल्पविराम से भी की जा सकती है।
- ❖ किसी की बात को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करने से पहले वाक्य में अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है।

(ख) निर्देशक चिह्न का प्रयोग अधिकतर निर्देश या उदाहरण देने के लिए होता है। दो संबंधित शब्दों के बीच में उनके जुड़ाव को दर्शाने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग होता है।

(ग) 1. महात्मा गांधी जी ने कहा था, "करो या मरो।"
2. नेता जी सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "दिल्ली चलो।"

2 (क) । (ख) - (ग) "" (घ) () (ङ) – (च) !

3 (क) जहाँ क्रिया के वर्तमान में होते रहने का पता चले, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं।

(ख) मोहक, कविता, नम्रता और निमिश क्या पूछ रहे थे?

(ग) वाह! क्या बात कही आपने। यहाँ-वहाँ की हाँकना बंद करो।

4 (क) शाबाश! तुम अपने-पराए की पहचान रखते हो।

(ख) उधर क्या देख रहे हो? इधर आओ।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

रूपा ने दीया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में संपूर्ण सामग्रियाँ सजाकर काकी की ओर चली। काकी के समीप पहुँचकर उसने कंठावरूद्ध स्वर में कहा – "काकी उठो! भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई। उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि मेरा अपराध क्षमा कर दें।" भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाते हैं, काकी सब भुलाकर बैठी हुई खाना खा रही थी।

इकाई प्रश्न पत्र 1

1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं। इसके दो रूप हैं – 1. मौखिक 2. लिखित।
2. स्वरों को व्यंजनों के समान इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि स्वरों की अपनी मात्राएँ होती हैं तथा वे अपने आप में स्वतंत्र होते हैं जबकि व्यंजन अपने उच्चारण के लिए स्वरों पर निर्भर रहते हैं।
3. जब किसी ध्वनि को नाक से बोला जाए तो उसके लिए जिस बिंदु का सहारा लिया जाता है उसे अनुस्वार कहते हैं; जैसे – चंदन, बंधन, वंदन आदि। जब किसी ध्वनि को बोलते समय हवा मुँह और नाक दोनों से निकले तो वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाते हैं। इस ध्वनि को अनुनासिक कहते हैं; जैसे – आँगन, माँग आदि।
4. पृष्ठ – प् + ऋ + ष् + ठ् + अ

   कीर्तन – क् + ई + र् + त् + अ + न् + अ

   अहंकार – अ + ह् + अं + क् + आ + र् + अ
5. आँख दाँत आसरा भाई
6. चढ़ाई घुलाव रुलाई छपाई
7. छात्राएँ रातें मुखड़े अध्यापकगण
8. 1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. संप्रदान कारक
9. जो सर्वनाम शब्द दूर या पास की किसी वस्तु के बारे में निश्चयपूर्वक कुछ बताएँ वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं तथा जब कोई सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर न आकर उसके साथ आकर उसकी विशेषता बताए तो सार्वनामिक विशेषण होता है।
10. (क) दृष्टि (ख) नमस्कार (ग) चुहिया (घ) करुणा

16. शब्द-भंडार

1 (क) सूरज, रवि। (ख) अनिल, समीर। (ग) वारि, तोय।
(घ) सरिता, सलिला। (ङ) आकांक्षा, चाह। (च) पहाड़, गिरि।

2 (क) मृत्यु (ख) चेतन (ग) निरर्थक (घ) मधुर (ङ) उऋण (च) वाचाल

3 (क) अनेक (ख) निराशा (ग) पतन (घ) तरल (ङ) भोगी

4 (क) अर्थ (ख) मैथी (ग) क्रूर (घ) पीठ (ङ) मन (च) परिणाम

5 (क) अनल – कल रात अनल ने सब फ़सल जलाकर राख कर दी।
अनिल – मलय पर्वत की ओर से आने वाली मधुर अनिल को मलयानिल कहते हैं।

(ख) कपट – कृष्ण को मारने के लिए कंस ने बहुत छल-कपट किया।
कपाट – भवन के सब कपाट बंद कर दिए गए।

(ग) कोष – अलीबाबा को कोष इसलिए मिला क्योंकि वह नेक था।
कोश – विभिन्न भाषाओं के शब्दकोश हमारा ज्ञान बढ़ाते हैं।

6 (क) मयंक विश्वसनीय व्यक्ति है। (ख) शिष्यों को आज्ञाकारी होना चाहिए।
(ग) शहरों में सब सुलभ है। (घ) ताजमहल अतुलनीय है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (ख) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

1 सुलभ **2** उपवन **3** दिन
4 नदी **5** पक्षपाती **6** तात
7 हस्तलिखित **8** तरल **9** हवा
10 सूत **11** आदर **12** वाचाल
13 अतिवृष्टि

1 सु	2 उ	5 प	7 9 ह	वा	ज्ञ
ल	प	क्ष	स्त	10 सू	त
भ	व	पा	लि	11 आ	12 वा
3 दि	4 न	ती	खि	द	चा
छ	दी	6 ता	8 त	र	ल
13 अ	ति	वृ	ष्टि	क्ष	ञ

17. उपसर्ग व प्रत्यय

1 (क) किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्द या शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं; जैसे – 'धर्म' शब्द में 'अ' उपसर्ग के जुड़ने पर वह विपरीत अर्थ देने लगता है। अ + धर्म = अधर्म

(ख) किसी शब्द के पीछे जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाने वाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं; जैसे – समाज + इक = सामाजिक,
सज्जा + इत = सज्जित

2 निर् – निर्जीव, निर्दोष। कु – कुचाल, कुरूप।
अभि – अभिमान, अभिशाप। वि – विशेष, विफल।

3 इक – साप्ताहिक, मौलिक। आई – पढ़ाई, लिखाई।
ईला – कंटीला, नुकीला। आहट – घबराहट, मुसकराहट

4

	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
अज्ञानता	अ	ज्ञान	ता
अपठित	अ	पाठ	इत
सुगंधित	सु	गंध	इत
सफलता	स	फल	ता
बेईमानी	बे	ईमान	ई

5 निडर सजावट दंडित निर्जीव कथा ऊँचाई

6 मनुष्य – मनुष्यता, मानुषिक शिक्षा – शिक्षित, शैक्षिक
लिख – लिखाई, लिखावट सच्चा – सच्चाई, सच्ची
शक्ति – शक्तिहीन, शक्तिशाली लज्जा – लज्जाहीन, लज्जित

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** (ग) **3** (क) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

सामाजिक निहत्था रुकावट चतुराई विकल अनादि बेवजह अशांत
अधिपति वीरता कुमति निर्भय

18. संधि

1 (क) दो शब्दों में से पहले शब्द के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के पहले वर्ण में मेल होने से वर्णों के उच्चारण में परिवर्तन आ जाता है। यही परिवर्तन या विकार संधि कहलाता है; जैसे – पर + उपकार = परोपकार। इसमें 'पर' का 'अ' तथा 'उपकार' का 'उ' मिलकर 'ओ' बन गए हैं।

(ख) स्वर संधि के पाँच भेद हैं–

(क) दीर्घ संधि – लघु + उत्तर = लघूत्तर, कवि + इंद्र = कवींद्र

(ख) गुण संधि – महा + ईश = महेश, सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा

(ग) यण् संधि – अति + अंत = अत्यंत, प्रति + एक = प्रत्येक

(घ) वृद्धि संधि – सदा + एव = सदैव, वन + औषध = वनौषध

(ङ) अयादि संधि – भौ + उक = भावुक, नै + इका = नायिका

(ग) शब्द या शब्दांश के अंतिम वर्ण का मेल दूसरे शब्द या शब्दांश के पहले वर्ण के साथ होने की क्रिया संधि कहलाती है, जिससे नया शब्द बनता है। इस नए शब्द को पुनः मूल शब्दों या शब्दाशों के रूप में अलग करने की क्रिया संधि-विच्छेद कहलाती है।

2 कपि – ईश सम् – तोष महा – उदय नि – ऊन
अति – अंत नमः – ते

3 परमौषध, सदैव, लघूत्तर, वधूत्सव, देवेंद्र, परमौदार्य।

4 नदी + ईश, महा + आत्मा, देव + आलय, महा + ऋषि, तत् + लीन, निः + धन

5 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✗

6 नि + ऊन सु + अच्छ शे + अन गै + अक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (ख) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

दामोदर सच्चरित्र एवं महात्मा थे। उनकी दया की कहानियाँ सदैव लोग दोहराते थे। उनके अंदर बहुत संतोष था। वे जहाँ भी जाते यथोचित सम्मान पाते। उन्हें जानने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनकी संगति चाहता था। वे गाने में भी दिग्गज थे। जब वे गाने में तल्लीन हो जाते, तो उन्हें सुधबुध नहीं रहती थी।

19. वाक्य विचार

1 (क) व्याकरण के नियमों में बँधा शब्दों का सार्थक एवं व्यवस्थित समूह वाक्य कहलाता है।

(ख) वाक्य के दो अंग होते हैं – उद्देश्य और विधेय। वाक्य में जो कर्म अथवा क्रिया करने वाला है उसे कर्ता अथवा उद्देश्य कहते हैं। वाक्य का जो भाग कर्म तथा क्रिया के साथ जुड़ा है, वह विधेय कहलाता है।

(ग) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद माने गए हैं–

1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य

(घ) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद माने गए हैं–

1. विधानवाचक 2. प्रश्नवाचक 3. विस्मयादिबोधक 4. आज्ञार्थक
5. इच्छावाचक 6. संकेतवाचक 7. निषेधवाचक 8. संदेहवाचक

2 (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

3 (क) वाह! आप तो बहुत ईमानदार हो।

(ख) शायद आज ट्रेन समय पर न आए।

(ग) तुम विद्यालय मत जाओ।

(घ) क्या काव्या खेल रही है?

4 (क) संयुक्त (ख) मिश्र (ग) सरल (घ) मिश्र (ङ) मिश्र (च) सरल

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क)

रचनात्मक गतिविधि

अभी मेरा अंत नहीं होगा। अभी-अभी तो मेरे मन में मृदुल वसंत आया है। अभी मेरा अंत नहीं होगा। ये हरे-हरे पात, डालियाँ, कलियाँ और कोमल गात। मैं अपना स्वप्न-मृदुल-कर जगा प्रत्यूष मनोहर निद्रित कलियों पर फेरूँगा। मैं पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा। अपने नव-जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा।

20. वाक्य की अशुद्धियाँ

(क) आपकी माता जी आ गईं।

(ख) अध्यापिका पढ़ा रही हैं।

(ग) आपसे अनेक बार कहा है।

(घ) मेरे कहने के बावजूद भी तुम नहीं गए।

(ङ) मुझे भी जाना है।

(च) गाजर काटकर खरगोश को खिलाओ।

(छ) क्या तुमने बात कर ली है?

(ज) पिता जी ने तुम्हें बुलाया है।

(झ) लड़का घोड़े की सवारी कर रहा था।

(ञ) पेड़ पर बंदर कूद रहे हैं।

21. मुहावरे-लोकोक्तियाँ

1 (क) अपने सामान्य अर्थ से अलग विशेष अर्थ देने वाले वाक्यांश मुहावरे कहलाते हैं।

(ख) लोकोक्ति का अर्थ है, लोक में प्रसिद्ध बात या कहावत। लोकोक्ति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है। वाक्य में प्रयुक्त होकर भी यह अपना अस्तित्व बनाए रखती है।

(ग) मुहावरों का रूप परिवर्तनशील है। ये वाक्य के अनुसार अपना रूप लिंग-वचन, क्रिया के आधार पर बदल सकते हैं। जबकि लोकोक्तियाँ अपने मूल रूप में ही काम करती हैं। इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से भी संभव है।

2 (क) हरा देना / टक्कर देना – रानी लक्ष्मीबाई ने अकेले ही विशाल अंग्रेज़ सेना के दाँत खट्टे कर दिए।

(ख) बहुत परेशान होना – मानसी को जब सब काम अकेले करना पड़ा तो उसे नानी याद आ गई।

(ग) आत्मसमर्पण करना – कल वीरप्पन ने पुलिस के सामने हथियार डाल दिए।

3 आँखें दिखाना – डराना

अपनी डफली अपना राग – सबकी भिन्न-भिन्न राय

कान खड़े होना – सावधान होना

अंग-अंग टूटना – बहुत थकना

अंधा क्या चाहे, दो आँखें – बिना प्रयत्न के ही मनचाही वस्तु मिलना

गुड़ गोबर करना – काम बिगाड़ना

4 (क) आज सुबह की सैर भी हो गई और तुमसे मिलना भी, इसे कहते हैं **एक पंथ दो काज।**

(ख) तुम आ गए हो, अब मैं घी **के दीये जलाऊँगा।**

(ग) गोल करने पर कोच ने खिलाड़ी की पीठ **ठोंकी।**

(घ) मैं इस काम को पूरा करके ही **दम लूँगा।**

5 तुमने सब गुड़-गोबर कर दिया। मैंने तुम्हें गागर में सागर भरने को कहा था। आँखें मत दिखाओ, मैं तुम्हें जानता हूँ तुम हो आँख के अंधे नाम नयनसुख। तुम झूठ बोलते हो और फिर टस से मस नहीं होते। चिंता मत करो थोड़ी देर में दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा।

मुहावरे – गुड़-गोबर कर देना; आँख दिखाना; टस से मस न होना

लोकोक्तियाँ – गागर में सागर भरना; आँख के अंधे नाम नयनसुख; दूध का दूध, पानी का पानी

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (घ) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

पीठ ठोंकना	नानी याद आना	अंधों में काना राजा
पेट में चूहे कूदना	सहज पके सो मीठा होय	अगर-मगर करना
माथा पकड़ना	नाक फुलाना	टस से मस न होना

एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना

इकाई प्रश्न पत्र 2

1 (क) किसान खेत में अन्न उगाकर सबकी भूख मिटाता है।
सीमा को भिंडी पसंद नहीं है। उसे अन्य सब्ज़ी दो।

(ख) गौरव के पास कुल 25 आम हैं।
नदी के कूल पर गाय पानी पी रही थी।

2 मधु मित्र बादल अन्न

3 नीरस अपमान कुमार्ग निष्पक्ष

4 अनुज – अपने से छोटा भाई सर्वज्ञ – सब कुछ जानने वाला
वैज्ञानिक – विज्ञान का ज्ञाता प्रजातंत्र – प्रजा पर, प्रजा के द्वारा, प्रजा का शासन।

5 अन – अनभिज्ञ, अनहोनी पूर्वक – कुशलतापूर्वक प्रेमपूर्वक
प्रति – प्रतिदिन, प्रत्येक त्व – मातृत्व, भ्रातृत्व

6 विद्या + आलय जगत + नाथ नर + ईश महा + उदय

7 (क) क्या आप घर लौट आए?

(ख) उफ़! उसके पैर में काँटा चुभ गया।

(ग) मेरी इच्छा है कि आप पढ़ती रहें।

(घ) शायद कल बारिश होगी।

8 (क) खुशी मनाना (ख) नाराज़ होना (ग) सच को डर नहीं

9 (क) पूरा काम मैंने किया है। (ख) मुझे चाय पीनी है।

(ग) कुरसी पर बैठ जाओ। (घ) बहुत ठंड है।

रचना खंड

1. रचनात्मक अभिव्यक्ति

2 (क)

कार्यक्रम की सूचना

4 सितंबर 20...

'पढ़ो और पढ़ाओ' के केंद्रीय विचार को प्रोत्साहित करने के लिए एक सुंदर कार्यक्रम की आयोजना 5 सितंबर 20... को प्रातः 10 बजे विद्यालय के प्रांगण में की जाएगी। इस अवसर पर बच्चों द्वारा अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाने के साथ-साथ डॉ॰ राधाकृष्णन जी की जीवनी को एकांकी रूप में प्रस्तुत भी किया जाएगा।

(ख)

कार्यक्रम का आयोजन

दिल्ली 25 दिसंबर 20...

हमारे विद्यालय के प्रांगण में कल वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य जी के भाषण से हुआ। इसके बाद सरस्वती वंदना तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इसके बाद पुरस्कार वितरित किए गए। जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं परीक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

(ग)

बिकाऊ है

कंप्यूटर

केवल दो वर्ष पुराना एकदम ठीक हालत।

संपर्क करें – अंकुश आर-175, मोहन गार्डन, उत्तम नगर

बिकाऊ है

डाइनिंग टेबल

केवल छह माह पुरानी डाइनिंग टेबल कुर्सियों सहित।

संपर्क करें –

× × ×

बिकाऊ है

टी॰वी॰ सेट

केवल दो वर्ष पुराना टी॰वी॰ सेट। एकदम अच्छी हालत में।

खरीदने हेतु संपर्क करें-

× × ×

(घ)

खरीदिए
नववर्ष हेतु सुंदर एवं सस्ते ग्रीटिंग कार्ड्स। अपने प्रियजनों को भेजिए शुभकामना संदेश नए अंदाज़ में।

2. अपठित गद्यांश

1 (क) 1. लगभग पंद्रह किलोमीटर

2. सरल इसलिए क्योंकि दूर नहीं है तथा सड़क के साथ-साथ मेट्रो से भी जाने की सुविधा है। कठिन इसलिए क्योंकि उन सड़कों पर यात्रा करना कठिन है क्योंकि वहाँ तेज़ रफ़्तार वाली गाड़ियाँ चलती रहती हैं।

3. इससे अभिप्राय है कि आपके पास इतना धन है कि आप कुछ फिजूलखर्च भी कर सकते हैं।

4. वाहनों की संख्या इतनी तेज़ी से बढ़ने के कारण लेखक को पुलों के लड़खड़ा जाने का अंदेशा है।

5. समानांतर – एक-दूसरे के साथ-साथ समान अंतर की दूरी पर
लड़खड़ाना – असंतुलित होकर गिरने की अवस्था में आ जाना

(ख) 1. भगवान ने ज्ञान से संसार का पुनर्निर्माण करने के लिए कहा।

2. ज्ञान ने चौराहे पर जाकर कहा, "मैं मसीहा हूँ, पैगंबर हूँ, भगवान का प्रतिनिधि हूँ। मेरे पास तुम्हारे उद्धार के लिए एक संदेश है।"

3. ज्ञान ने अंत में मानव जाति के सबसे बड़े शत्रु धर्म से लड़ने का निश्चय किया।

4. रात – रात्रि, निशा भगवान – ईश्वर, परमात्मा

5. न + आस्तिक, उत् + आधार

(ग) **1.** (ग) **2** (क) **3** (घ) **4** (क) **5** (ख)

3. अपठित काव्यांश

(क) 1. मेघ मेहमान की तरह सज-सँवरकर आए हैं।

2. मेघों के गाँव में आने को गाँव में आए किसी शहरी मेहमान के आने के समान कहा है।

3. मेघों के आने पर पेड़, आँधी, धूल और नदी आदि में ऐसे ही खुशी भरी हलचल मच गई जैसे गाँव में किसी शहरी मेहमान के आने पर मच जाती है।

4. मेघों का आगमन

5. सरिता, सलिला

(ख) 1. चिड़िया तिनका-तिनका लाकर अपने लिए नया आवास बनाती है।
2. मानव की यहाँ दूसरे का दुख दूर करने, आँसू पोंछने की विशेषता बताई गई है।
3. दानव को जी-भर रुलाने वाला कहा गया है।
4. सृजन से
5. विलोम

(ग) 1. आँगन में नन्हे पौधों के लहलहाने की बात की गई है।
2. सुबह-शाम प्यारे पौधे अपने पत्ते हिला-हिलाकर बात करेंगे।
3. पौधों को प्रकृति से मिट्टी, पानी और उजाला मिलता है।
4. पेड़-पौधों को इस काव्यांश में छोटे बच्चों के समान बताया गया है।
5. खुशी

(घ) 1. पेड़ों को न काटने की बात कही गई है।
2. पेड़ों को धरती माँ के वस्त्र बताया गया है।
3. अशोक की तरह
4. शीतल छाया पेड़ देते हैं।
5. पेड़ – तरु, वृक्ष

(ङ) 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)

4. अनुच्छेद लेखन

1. विद्यालय में मेरा पहला दिन

मुझे अभी तक याद है जब मैं विद्यालय में पहले दिन गया था तब मैं नर्सरी कक्षा में था। माँ ने सुबह मुझे प्यार से जगाया और विद्यालय के लिए तैयार किया। विद्यालय, मेरी कक्षा, मेरे सहपाठी और अध्यापक-अध्यापिकाएँ सभी कुछ मेरे लिए एक नई दुनिया के जैसा था। हमारी कक्षा की शिक्षिका ने पूरी कक्षा से मेरा परिचय कराया। उन्होंने मेरे माता-पिता, दादा-दादी और भाई-बहन के बारे में पूछा। फिर मुझे मेरे विषयों और पुस्तकों के बारे में जानकारी दी गई। मध्यावकाश के दौरान मेरे कुछ सहपाठी मुझसे बात करने लगे। मैंने उनके साथ मध्याह्न भोजन साझा किया। विद्यालय में पहला दिन होने के कारण मध्यावकाश के बाद पढ़ाई नहीं हुई। बच्चे खेलने लगे। मैंने खेलघर में जाकर कैरम बोर्ड खेला। खेल खेलते हुए मुझे बहुत आनंद आया। फिर छुट्टी की घंटी बजी। बच्चों ने बस्ता संभाला और आपस में बात करते हुए घर के लिए निकल गए।

2. अध्यापक/अध्यापिका जिनसे प्यार करते हैं बच्चे

हमारी हिंदी की अध्यापिका श्रीमती कमला देवी हैं। सभी छात्र-छात्राएँ उनका बहुत सम्मान करते हैं और उन्हें बहुत प्यार करते हैं। वे बहुत मृदुभाषिणी हैं। वे हमें हमारा पाठ्यक्रम बहुत ही अच्छी तरह समझाती हैं। इसके लिए वे अलग-से कविताएँ-कहानियाँ आदि उदाहरण के

रूप में शामिल करती रहती हैं। उन्हें देखकर हम सबको भी विनम्र और शांत स्वभावी बनने की प्रेरणा मिलती है। उनकी शिक्षण पद्धति भिन्न और प्रभावी है। वे नीरस सामग्री को भी सरस बनाकर प्रस्तुत करती हैं। हम सभी उन्हें बहुत प्यार करते हैं।

3. बारिश में भीगने का अद्‌भुत आनंद

परसों जब छुट्टी के बाद हम विद्‌यालय से निकले तो आसमान में अचानक काले-काले बादल घिर आए, ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी। देखते ही देखते बारिश की मोटी-मोटी बूँदें गिरने लगीं और फिर ज़ोरदार बारिश होने लगी। मैं अपने दोस्तों के साथ विद्‌यालय से निकला था। पहले हमने एक पेड़ के नीचे छिपकर बारिश से बचने की कोशिश की पर जब पेड़ हमें ज़ोरदार बारिश से नहीं बचा पाया तो हमने अपने बस्ते पॉलीथीनों में बंद करके पेड़ पर टाँग दिए और हम सब खुले आसमान के नीचे, तेज़ बारिश में खेलने-कूदने और नाचने लगे। सचमुच मैंने अपने जीवन में बारिश में भीगने का इससे अधिक आनंद कभी नहीं लिया।

✤ अन्य विषयों पर छात्र स्वयं इसी प्रकार अनुच्छेद लिखने का अभ्यास करें।

5. निबंध लेखन

1. जब मेरी गाड़ी खराब हो गई

यह उन दिनों की बात है, जब हमारी वार्षिक परीक्षाएँ चल रही थीं। सुबह मुझे तैयार होने में थोड़ी देर हुई और मेरी स्कूल-बस छूट गई। पिता जी ने मुझे जल्दी तैयार होने के लिए कहा और बोले कि वे मुझे अपनी गाड़ी से विद्‌यालय छोड़ देंगे। मैं झटपट तैयार होकर पिता जी के साथ उनकी गाड़ी में सवार होकर विद्‌यालय की ओर चल पड़ा। हम थोड़ी ही दूर गए थे कि गाड़ी अचानक रुक गई। पिता जी ने देखा तो पाया कि इंजन में कोई गड़बड़ी आ गई है। परीक्षा शुरू होने में कुछ ही समय शेष था। मैं सोच-सोचकर परेशान हो रहा था कि इस गाड़ी को भी अभी खराब होना था। तभी उधर से हमारे हिंदी के अध्यापक जी अपने स्कूटर पर जा रहे थे। हमें देखकर वे रुक गए। पूरी स्थिति पता लगने पर वे मुझे अपने साथ विद्‌यालय ले गए वरना गाड़ी खराब होने के कारण संभवत: मेरी परीक्षा ही छूट जाती।

बाद में पिता जी ने बातया कि उन्हें गाड़ी ठीक कराने के लिए काफ़ी परेशान होना पड़ा। आस-पास गाड़ी ठीक करने वाले की कोई दुकान नहीं थी। मोबाइल में भी नेटवर्क सही नहीं आ रहा था। तब उन्होंने रास्ते में जा रहे किसी अन्य गाड़ीवाले से मदद माँगी। वह उन्हें आगे गाड़ी ठीक करने वाले की दुकान तक ले गया। वहाँ से पिता जी उसे साथ लेकर आए। तब उसने गाड़ी ठीक की। मैं तो किसी तरह परीक्षा देने पहुँच ही गया। परंतु उस दिन गाड़ी खराब होने के कारण पिता जी दफ़्तर नहीं जा सके।

2. वृक्षारोपण

वृक्षारोपण का अर्थ होता है अधिक से अधिक संख्या में पौधे लगाना। वृक्ष मनुष्य को जीवन प्रदान करते हैं। इनसे हमें ताजी हवा मिलती है। ये प्रदूषण को दूर करते हैं और चारों तरफ़ हरियाली फैलाते हैं। इनसे हमें शुद्‌ध हवा मिलती है। वृक्षों की मदद से मिट्‌टी की शक्ति भी

बरकरार रहती है। पर्यावरण विभाग समय-समय पर वृक्षारोपण अभियान चलाता रहता है। इस काम में एन.जी.ओ. की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है गैर-सरकारी संगठन पेड़ लगाने के लिए जागरूकता अभियान चलाते रहते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में भी वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाता है।

वृक्ष मनुष्यों के लिए तो जीवनदायिनी हैं हीं, साथ ही जंगली जानवर और पशु-पक्षियों को भी सुरक्षा प्रदान करते हैं। अधिकतर पक्षी अपना घोंसला वृक्षों पर बनाते हैं। वृक्षारोपण से वन संपदा में वृद्धि होती है जिससे वन्य जीवों को पर्याप्त खाद्य सामग्री मिलती है।

इस तथ्य को भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि यदि हम वृक्ष काटते रहेंगे और उगाएंगे नहीं तो वनों की वीरानगी के साथ-साथ मानव जीवन भी वीरान हो जाएगा। इसलिए एक वृक्ष काटने पर दो नए वृक्ष उगाना बेहद ज़रूरी है।

3. प्रातःकाल की सैर

प्रातःकाल की सैर का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है। प्रातःकाल की सैर के साथ हमारे दिन की ताज़ा शुरुआत होती है तथा दीर्घकालिक रूप में यह हमारे अच्छे स्वास्थ्य का आधार बनती है।

मैं प्रतिदिन सुबह-सुबह अपने दादा जी के साथ सैर पर जाता हूँ। हम पास के ही एक पार्क में सैर के लिए जाते हैं। वहाँ मुझे और दादा जी को अपने दोस्त टहलते हुए मिल जाते हैं। सुबह के समय वातावरण शांत रहता है तथा वायु शुद्ध होती है। यह शुद्ध वायु फेफड़ों को उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने वाली होती है। प्रातःकालीन सैर के दौरान चहचहाती चिड़ियाँ, उगता सूर्य, मंद-मंद बहती हवा हमारे मस्तिष्क को ताज़गी से भर देते हैं।

हम सभी को प्रतिदिन सुबह-सुबह सैर पर अवश्य जाना चाहिए। महात्मा गांधी जी का कहना था कि टहलना सबसे अच्छा व्यायाम है। वे स्वयं भी सदैव इसका पालन करते थे। चाहे जैसा भी मौसम हो वे सुबह-सुबह टहलने अवश्य जाते थे। टहलने को वे कसरतों की रानी कहते थे। यह ऐसा व्यायाम है, जिसे हर कोई सरलता से कर सकता है। इससे हम अनेक प्रकार के छोटे-मोटे रोगों से बचे रह सकते हैं।

❖ इसी तरह बच्चे अन्य विषयों पर स्वयं निबंध लिखने का अभ्यास करें।

6. पत्र लेखन

1 सी-550, उमराव नगर

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

दिनांक: 22 सितंबर 20××

प्रिय मित्र अनुभव,

नमस्ते।

मुझे अपने उस दिन के व्यवहार के लिए अत्यंत खेद है। मैं उस समय बहुत अधिक परेशान था। मैंने परीक्षा के लिए जितना परिश्रम किया था, परिणाम उतना संतोषजनक नहीं आया। तुम तो मुझे समझा ही रहे थे परंतु मैं अपनी असफलता पर इतना अधिक खिन्न था कि तुम पर ही चिल्लाने लगा। उस समय के अपने दुर्व्यवहार के लिए मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ। साथ ही तुम्हें धन्यवाद भी देना चाहता हूँ कि तुमने एक सच्चे मित्र की भाँति कठिन समय में मेरा साथ दिया। अपने माता-पिता को मेरी ओर से प्रणाम कहना और मधुर को प्यार देना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

अविरल

2. डी-275, रोहिणी पश्चिम

दिल्ली-110095

दिनांक: 20 सितंबर 20××

आदरणीय मामा जी

चरण स्पर्श।

लगता है आप हम सबको बिल्कुल ही भूल गए हैं। आपको हमारे घर आए पूरे तीन वर्ष बीत गए हैं। अब से तीन साल पहले आप गर्मी की छुट्टियों में मामी जी और चुनमुन के साथ आए थे। हम कितना घूमे थे! कितना खेले थे! और हम सब ने कितने मज़े किए थे। उन दिनों को याद करके मैं और दीदी अब तक खुश होते रहते हैं। इस बार फिर छुट्टियों में मामी जी और चुनमुन के साथ आ जाइए। हम सब फिर से खूब मज़े करेंगे।

मेरी ओर से मामी जी को प्रणाम कहिएगा और चुनमुन को प्यार।

आपका प्यारा भानजा

हर्षित

6. सेवा में,

प्रधानाचार्या महोदया,

'क' विद्यालय

'ख' नगर, नई दिल्ली

दिनांक: 14 जून 20××

विषय – कक्षा में चलने वाले पंखों की खराबी के संबंध में पत्र।

आदरणीय महोदया,

मैं अपनी पूरी कक्षा की ओर से हमारी कक्षा में लगे छत के पंखों के संबंध में शिकायत करना चाहती हूँ। ये पंखे चलते समय बहुत तेज़ खड़-खड़ की आवाज़ करते रहते हैं, जिससे हम सबका कक्षा में बैठकर एकाग्रचित्त होकर पढ़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। मैंने कई बार इस संबंध में शिकायत की परंतु किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। इसलिए अब मुझे आपसे शिकायत करनी पड़ी। कृपया जितनी जल्दी संभव हो हमारी इस समस्या का निवारण करें।

आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

सुनंदा एवं समस्त कक्षा-छात्राएँ

7. सेवा में,

प्रधानाचार्या महोदया,

'क' विद्यालय

'ख' नगर नई दिल्ली

विषय – अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र।

आदरणीय महोदया,

मेरे माता जी-पिता जी पाँच दिन के लिए हरिद्वार-ऋषिकेश घूमने के लिए जा रहे हैं। मैं भी उनके साथ जाना चाहती हूँ। इसलिए आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे पाँच दिन (5-7-×× से 9-7-×× तक) का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद

सुप्रिया भारद्वाज

कक्षा-6

अन्य विषयों पर छात्र स्वयं पत्र लिखने का अभ्यास करें।

7. कहानी लेखन

1. जब बीरबल बच्चा बना

एक बार बादशाह अकबर अपने दरबार में बैठे थे। सभी दरबारी उपस्थित थे, केवल बीरबल नहीं थे। बीरबल बड़ी देर से दरबार में पहुँचे। अकबर ने उनके देर से आने का कारण पूछा तो बीरबल बोले, "बच्चे की ज़िद के कारण देर हो गई।" अकबर बोले, "बच्चों को मनाना तो बड़ा आसान काम है। इतनी बड़ी-बड़ी मुश्किलें सुलझाने वाले बीरबल एक बच्चे की ज़िद के सामने हार गए?" बीरबल बोले, "जहाँपनाह बच्चों को डाँटकर चुप कराना सरल है, पर उन्हें मनाना वाकई बहुत मुश्किल काम है।" इस पर अकबर बच्चे को मनाकर दिखाने का दावा करने लगे। बीरबल ने कहा, "तो फिर ठीक है बादशाह सलामत! मैं बच्चा बनकर ज़िद करता हूँ और आप मुझे मनाकर दिखाइए।" अकबर राज़ी हो गए।

अब बीरबल एक बच्चे की तरह अकबर की गोद में चढ़ गए। शरारतें करने लगे। अकबर ने मनाने की कोशिश की पर बीरबल न माने। अकबर ने डाँटा तो बीरबल ज़ोर से बच्चे की तरह रोने लगे। रोते-रोते गन्ना खाने की ज़िद करने लगे। अकबर ने एक सैनिक भेजकर गन्ना मँगवा दिया तो बीरबल गन्ने के टुकड़े करने की ज़िद करने लगे। अकबर ने गन्ने के टुकड़े करवा दिए तो बीरबल फिर टुकड़ों को जोड़कर साबुत गन्ना खाने की ज़िद करने लगे। अकबर ने दूसरा गन्ना देकर मनाने की कोशिश की पर बीरबल न माने। उसी गन्ने को साबुत करके देने की ज़िद करके रोने लगे। आखिर परेशान होकर अकबर ने हार मान ली। बीरबल पुनः अपनी वास्तविक भूमिका में आ गए। अपनी बात सिद्ध करके दिखाने के लिए अकबर ने उन्हें शाबाशी और इनाम दिया।

2. विश्वासघात का फल

एक मछुआरा प्रतिदिन नदी में मछलियाँ पकड़ने जाता था। एक दिन जब वह जाल में मछलियाँ पकड़कर घर लाया और उसने जाल खोला तो देखा कि उसमें एक मगरमच्छ भी है। मगरमच्छ ने मछुआरे से प्रार्थना की कि वह उसे न मारे। मछुआरे को उस पर दया आ गई। उसने उसे वापस नदी में छोड़ दिया और उसे प्रतिदिन खाने के लिए मछलियाँ भी पकड़कर देने लगा। एक दिन मछुआरा मछलियाँ नहीं पकड़ सका तो वह मगरमच्छ से बोला, "क्षमा करना मित्र, आज मैं तुम्हारे लिए मछलियाँ नहीं ला सका।" मगरमच्छ को बड़ी भूख लगी थी। वह बोला, "तो फिर आज मैं तुम्हें खाकर ही अपनी भूख मिटा लेता हूँ।" इतना कहकर मगरमच्छ मछुआरे का पैर पकड़कर उसे नदी में खींचने लगा। जल देवता उनका प्रतिदिन का यह क्रियाकलाप देखते रहते थे। मगरमच्छ का यह विश्वासघात देखकर उन्होंने तुरंत अपने शस्त्र से उसे मार डाला और मछुआरे के प्राण बचाए। आखिर मगरमच्छ को उसके विश्वासघात का फल मिल गया।

3. सुखी जीवन का रहस्य

दो मित्र थे। दोनों साथ पढ़ते और साथ खेलते थे। उनमें से एक के पिता जी का तबादला कहीं दूर हो गया और दोनों मित्र बिछुड़ गए। वर्षों बाद दोनों मित्र फिर मिले। एक-दूसरे का हाल-चाल पूछा। एक मित्र किसी बैंक में क्लर्क की नौकरी कर रहा था और दूसरा बेरोज़गार था। क्लर्क की नौकरी कर रहे मित्र ने दूसरे मित्र से पूछा कि तुम बेरोज़गार क्यों हो तो उसने अपनी कहानी सुनाई कि मैं सदा अपने से अधिक वेतन पाने वाले को देखकर ईर्ष्या करता था और अपने से कम वेतन पाने वाले को देखकर घमंड करता। इस कारण कभी मुझे काम से निकाल दिया जाता और कभी मैं काम छोड़ देता हूँ। दूसरा मित्र बोला, "दूसरों पर ध्यान मत दो मेरे मित्र। यदि तुम वास्तव में सुखी जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो केवल अपने कर्म पर ध्यान दो। किसी के लिए बुरा न सोचो, न करो। अपने कर्म के प्रति लगन और मेहनत का भाव ही मनुष्य को सफल और सुखी बनाता है।" बेरोज़गार मित्र पछतावे के कारण रो पड़ा। अब उसने अपने मित्र के बताए मार्ग पर चलने का निश्चय किया।

8. चित्र-वर्णन

किसान

इस चित्र में दो किसान खेत में हल चला रहे हैं। वे दिनभर गर्मी या सर्दी की परवाह किए बगैर खेतों में मेहनत करते हैं। चित्र में चार सफ़ेद बैल दिखाई दे रहे हैं। वे किसान के मित्र की भूमिका निभाते हैं। खेतों में काम करते किसान का वे हर पल साथ देते हैं।

गेटवे ऑफ़ इंडिया

इस चित्र में मुंबई के समुद्र तट पर स्थित गेटवे ऑफ़ इंडिया को दिखाया गया है जोकि समुद्र तट के पास स्थित है। इसके पास में ताज होटल और अन्य इमारतें हैं। यहाँ पर्यटकों को समुद्र में घुमाने के लिए बोट खड़ी हैं। बड़ी संख्या में पर्यटक मौजूद हैं।

✤ बच्चे स्वयं अन्य चित्रों को देखकर उनका वर्णन करने का अभ्यास करें।

अभ्यास प्रश्न पत्र

1 (क) लिखित भाषा (ख) मौखिक (ग) पंजाबी (घ) छोटी, वर्ण (ङ) पाँच

2 बोली का क्षेत्र सीमित तथा भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है। बोली में सामान्यत: साहित्य की रचना नहीं होती, यदि होती भी है तो केवल लौकिक साहित्य की। जबकि भाषा का साहित्य समृद्ध होता है।

3 (क) अकस्मात (ख) समस्त (ग) विषधर

4 घर – तद्भव दही – तद्भव क्षेत्र – तत्सम दुग्ध – तत्सम
पत्र – तत्सम मोर – तद्भव

5 (क) ऊपर × नीचे दाएँ × बाएँ मित्र × शत्रु धरती × आकाश
(ख) धरती – धरा, वसुधा पानी – नीर, तोय पेड़ – वृक्ष, विटप
बादल – जलधर, मेघ

6 (क) लड़कपन देवत्व राष्ट्रीयता पुरुषत्व
(ख) सुत – पुल्लिंग सम्राट – पुल्लिंग अनुजा – स्त्रीलिंग कर्ता – पुल्लिंग
(ग) अध्यापकगण धातुएँ गायकवृंद तिथियाँ

7 (क) कर्ता कारक (ख) संप्रदान कारक

8 जिस सर्वनाम शब्द से किसी के बारे में प्रश्न किया जाए प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे – कौन आया है?
किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे – बाहर कुछ लोग आए हैं।

9 विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

मूलावस्था – कटु उत्तरावस्था – कटुतर उत्तमावस्था – कटुतम

10 (क) अकर्मक (ख) अकर्मक (ग) सकर्मक (घ) सकर्मक

11 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓

12 (क) यहाँ – स्थानवाचक (ख) अभी – कालवाचक

(ग) ठीक से – रीतिवाचक (घ) जी भर – परिमाणवाचक

13 (क) 1. विद्या + अर्थी 2. देव + ऋषि 3. तत् + लीन

(ख) 1. मिश्र 2. संयुक्त

(ग) 1. शाबाशी देना 2. बहुत गुस्सा करना

14–17 इन प्रश्नों को छात्र अभ्यास करते हुए स्वयं हल करें।

18 1. कोणार्क मंदिर का निर्माण राजा नरसिंह देव ने करवाया था।

2. सूर्य की किरणें दिन भर मंदिर के गर्भ-गृह में स्थित सूर्य की प्रतिमा को स्पर्श करती हैं।

3. रथ के पहिए वर्ष के बारह महीनों को दर्शाते हैं।

4. 12 वर्ष

5. वर्ष + इक = वार्षिक